स्व–निर्देशित अध्ययन सामग्री
Self-Instructional Learning Material

मास्टर ऑफ आर्ट्स (संस्कृत साहित्य)

एम. ए. (संस्कृत साहित्य)

प्रथम वर्ष

इतिहास काव्य

(द्वितीय प्रश्न पत्र)

दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत शिक्षा केन्द्र
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय
चित्रकूट, सतना (म.प्र.) – 485334

इतिहास काव्य

संस्करण–2016–17

प्रेरणा एवं मार्गदर्शन :
प्रो. नरेश चन्द्र गौतम
कुलपति
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (म.प्र.)

लेखक :
डॉ. प्रज्ञा मिश्रा
एसो. प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट (म.प्र.) 485 331

सम्पर्क सूत्र :
निदेशक, दूरवर्ती शिक्षा
दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत शिक्षा केन्द्र
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (म.प्र.)
दूरभाष– 07670–265460, इ–मेल– distance.gramodaya@gmail.com, website: www.mgcgvchitrakoot.com

प्रकाशक :
कुलसचिव
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (म.प्र.)

कापीराइट © : महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (म.प्र.)

आभार : यह अध्ययन सामग्री संबंधित पाठ्यक्रम और विषय के लिए विशेषज्ञों द्वारा तैयार की गई है। अध्ययन सामग्री को सरल, सुरुचिपूर्ण और बोधगम्य बनाने की दृष्टि से अनेक स्रोतों से प्रेरणा, संदर्भ और सामग्री ली गई है। सभी के प्रति आभार। अध्ययन सामग्री में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं। विश्वविद्यालय का इससे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

संदेश

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय की स्थापना मध्यप्रदेश शासन द्वारा एक पृथक अधिनियम से 1991 में सुप्रसिद्ध समाजसेवी पद्मविभूषण नानाजी देशमुख के प्रेरणा और प्रयासों से चित्रकूट में मंदाकिनी के तट पर हुई। विश्वविद्यालय का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण विकास के लिए आवश्यक मानव संसाधन तैयार करना है। विगत 25 वर्षों की समर्पित सेवाओं में विश्वविद्यालय ने ज्ञान–विज्ञान के विविध आयामों पर अपने शिक्षा, शोध, प्रशिक्षण और प्रसार कार्यों से छाप छोड़ी है।

ग्रामीण क्षेत्र में संसाधनों के अभाव तथा सामाजिक–पारिवारिक परिस्थितियों के कारण निरंतरता से अध्ययन करने में बाधायें आती हैं। विश्वविद्यालय ने इस समस्या के समाधान के लिए गुणवत्तायुक्त दूरवर्ती शिक्षा को प्रत्येक ग्रामीण के घर–आँगन तक पहुँचाने का संकल्प लिया है। विश्वविद्यालय का दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत शिक्षा केन्द्र इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सतत् प्रयत्नशील है।

मुझे प्रसन्नता है कि दूरवर्ती शिक्षा के विद्यार्थियों को स्वनिर्देशित अध्ययन सामग्री मुद्रित और व्यवस्थित रूप में पहुँचाये जाने का यह प्रयास न सिर्फ दूरवर्ती शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ायेगा बल्कि छात्रों को गहराई से अध्ययन करने की दिशा में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रो. नरेश चन्द्र गौतम
कुलपति

इतिहास काव्य

प्रथम–इकाई

इकाई की रूपरेखा

भूमिका

उद्देश्य

प्रथम सर्ग

2.1.1 लंका अभियान के लिये समुद्र लंघन हेतु उद्यत कपीश्वर हनुमानजी के सौन्दर्य का विविध उपमाओं के माध्यम से वर्णन तथा महेन्द्र गिरि के शैल प्रवर मैनाक द्वारा हनुमान जी की आतिथ्य का निवेदन।

2.1.2 मैनाक हनुमान संभाषण

2.1.3 समुद्र लंघन के रास्ते में सिंहिका राक्षसी से मिलन एवं हनुमान द्वारा सिंहिका का वध

द्वितीय सर्ग

2.1.4 लंका प्रवेश के पूर्व हनुमान द्वारा त्रिकूट नामक पर्वत पर रुकना एवं त्रिकूट पर्वत से लंका का अवलोकन

2.1.5 सुवर्णमयी लंका के सौन्दर्य का वर्णन

2.1.6 लघुरूप में हनुमान जी द्वारा रात्रि काल में लंका में प्रवेश

सूची प्रश्न

प्रदत्त कार्य

सन्दर्भ ग्रन्थ

भूमिका

महर्षि वाल्मीकि द्वारा प्रणीत 'रामायण' अखिल संस्कृत साहित्य के 'इतिहास काव्य' का स्वर्णिम परिच्छेद है। इस महान काव्य में ऋषि श्रेष्ठ वाल्मीकि द्वारा अयोध्या नरेश दशरथ नन्दन राम के जीवन के विविध पक्षों का सुन्दर काव्यात्मक विवेचन किया है। यह महान ग्रन्थ न केवल श्री राम की अनुपम गाथा है बल्कि इसके माध्यम से कवि ने तत्कालीन आर्यावर्त में विद्यमान विविध संस्कृतियों आर्य संस्कृति एवं इस संस्कृति की विशेषताओं एवं उनके संघर्ष, भौगोलिक एवं जलवायिक परिस्थितियों सामाजिक समरसता एवं सांस्कृतिक समन्वयन का अद्वितीय चित्रण किया है। सुवर्णमयी लंका के सौन्दर्य का वर्णन करते समय तो मानों कवि ने अपनी कलम ही तोड़ दी है। वास्तुशास्त्र (वास्तु विद्या) का इतना शास्त्रीय विवेचन अन्यत्र दुर्लभ है। इसी तरह चाहे वह मैनाक पर्वत हो महेन्द्र गिरि अथवा त्रिकूट पर्वत हो कवि की कमनीय कल्पना प्रकृति का अनुपम चित्रण प्रस्तुत करती है। शब्द अर्थ एवं भाव का गाम्भीर्य निश्चित रूप से रामायण को संस्कृत इतिहास काव्य का प्रतिनिधि ग्रन्थ बना देती है।

उद्देश्य :

प्रस्तुत इकाई का उद्देश्य पाठकों को वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड के अन्तर्गत प्रथम दो सर्गों में वर्णित विविध विषयों का सुन्दर सरल भाषा में ज्ञान प्राप्त कराना है।